लोकगीत
अजय कुमार चतुर्वेदी

सरगुजा अंचल में प्रचलित लोकगीत

सरगुजा अंचल में शैला, करमा, डमकच, उधुवा, सोदो, बान बहुली और लोकड़ी लोकगीत प्रमुख हैं। सरगुजा अंचल सहित संपूर्ण छत्तीसगढ़ और आसपास के प्रांतों में सामाजिक बुराइयों से लड़ने की प्रेरणा सरगुजिया लोकगीतों के माध्यम से पद्मश्री माता राजमोहिनी देवी ने दी है। उन्होंने लोकगीतों के माध्यम से बताया है कि नशा, नाश की जड़ है, छुआछूत पाप है। हमारे समाज में अशिक्षा अभिशाप है। उन्होंने लोकगीत में सदा सत्य बोलने की प्रेरणा देते हुए कहा है -

माघ पूर्णिमा मेहेन सत नदी आए।
सत सत बोले बर सत नदी आए।
सत नदी आए हो सत नदी आए।

सरगुजा अंचल में एक मान्यता प्रचलित है कि भीषण गर्मी के बाद पानी नहीं बरसता है तो दो मेंढकों की विधि विधान से शादी कराने से अच्छी वर्षा होने लगती है इसे बैंग विवाह कहते हैं। सरगुजिहा करमा लोकगीत में पानी के लिए मेंढक से गुहार करते हुए किसान कह उठता है -

ए मुनदी तरी आहा रे बैंग राजा पानी ला बुलावे।
ए नइहर कर जोड़ा सेंडिल छूटीन रे अब दिल टूटे हाय रे।
ए नइहर कर संग साथी छूटीन रे आसब दिल टूटे हाय रे।

इस तरह प्रकृति पूजन के साथ वर्ष भर होने वाले तीज त्योहार, मेला मड़ई और विवाह के अवसर पर तथा अन्य मांगलिक कार्यक्रम में भी तरह तरह के गीत गाने की परम्परा है। मांदर, मंजीरा और ढोल के साथ अपनी वेशभूषा में ही गीत गाते मनमोहक नृत्य की प्रस्तुति कभी भी देखा जा सकता है।

ऐतिहासिक
कृष्णा रंजन

मंडला से कबीरधाम के वर्तमान राजघराना का सम्बन्ध

कबीरधाम का वर्तमान राजघराना मंडला के गोंड राजघराने से संबंधित है। बिलासपुर जिले के पंडरिया जमींदार भी कवर्धा राजघराने के ही हैं। यह सम्बन्ध इस तरह का था कि यदि कवर्धा राज परिवार में कोई राजा संतानहीन मरता तो पंडरिया के वंशज राज्य के अधिकारी होते। बहुत पहले कवर्धा में मंडला राज परिवार के एक सामंत राजा राज्य करते थे।

यह राजा मोड़ा रियासत के कुल में से थे। इसी बीच मंडला और सागर के राजा के मध्य भयावह युद्ध छिड़ गया। मंडला के राजा सागर की सेना का मुकाबला अकेले नहीं कर सकते थे। मोड़ा के जमींदार तथा पंडरिया के राजा ने मिलकर मंडला के राजा की सहायता की और सागर की सेनाओं को मार गिराया। पंडरिया का महाबली सिंह बहादुर तो था ही महाधूर्त भी था। मंडला के राजा ने मोड़ा रियासत के शासक तथा महाबली सिंह को उनकी युद्ध संबंधी सेवाओं के लिए पुरस्कृत करने मंडला आमंत्रित किया। महाबली सिंह ने समय का लाभ उठाया। उसने भोडा के राजा को कुछ ऐसे षडयंत्र में फांस दिया कि वह यथासंभव मंडला न पहुंच सका। महाबली सिंह अकेले पहुंचा। मंडला राजा को उसने बताया भोडा के राजा कहीं फरार हो गए हैं। परिणामस्वरूप पूरा राज्य महाबली सिंह ने अकेले पुरस्कार के रूप में प्राप्त किया। महाबली सिंह ने लगातार 50 वर्ष तक शासन किया। उसके पुत्र उजियार सिंह ने पिता की मृत्यु के बाद शासन किया और निसंतान मर गया। उनकी माता और विधवा रानी ने कुछ दिन राजकाज देखा। विधवा रानी भी चल बसी। इसके बाद जो भी उत्तराधिकारी हुए किसी के संतान नहीं हुए।

भित्ति चित्र
हेमू यदु

जोगीमारा गुफा में आकर्षक भित्ति चित्र

सरगुजा अंचल के रामगढ़ पहाड़ी में जोगीमारा गुफा की छत को लेप लगाकर चिकना किया गया है। भित्तियों पर रंग बिरंगी छोटे छोटे आकर्षक पशु पक्षी, नर नारी, युद्धरत योद्धा, देव दानव, वट वृक्ष, गजराज और मानव समूह के चित्र बनाए गए हैं। इन चित्रों को उकेरने के लिए गहरे काले रंगों का बारीकी से प्रयोग किया गया है।

इनमें अधिकांश चित्र डेढ़ या दो इंच के हैं। देखने से ऐसा प्रतीत होता है मानों अभी निर्मित किए हों। प्राकृतिक प्रकोपों में इनमें कोई अंतर नहीं आया है। इन गुहा चित्रों में तत्कालीन समाज के जीवन दर्शन को समेटने का प्रयास किया गया है। हर चित्र अलग स्वरूप में कोई न कोई संदेश देते प्रतीत होते हैं। चित्रों की स्थिति और अवस्था को देखने से जीवंत लगने लगते हैं। जिसमें उपदेश देते हुए वृद्ध पुरुष के सिर के पीछे चक्र की आभा स्पष्ट परिलक्षित होती है, इससे किसी योगी या महात्मा की कल्पना की जा सकती है। कुछ विद्वान इसे महात्मा बुद्ध द्वारा राजसी ठाट बाट त्याग कर मोक्ष की प्राप्ति हेतु उपदेश व प्रवचन किए जाने की बात निरूपित करते हैं। वहीं दूसरी ओर मानव का वैराग्य जीवन दर्शन दिखाने के लिए तपस्वियों एवं साधु संन्यासियों को उपदेश देते हुए व उन उपदेशकों को जनसाधारण को सुनते और सत्संग करते दिखाया गया है। इसी तरह अनेक प्रकार के दिनचर्या से जुड़ी चित्रण भी यहां देखने मिलते हैं।

छत्तीसगढ़ी लोक नाट्य, लोक गीतों और लोक वाद्यों का संवादात्मक रूप है जिसमें लोक लोक साहित्य की समस्त विधाओं का समन्वय है। छत्तीसगढ़ी लोक नाट्य आंचलिक लोक जीवन का जीवंत चित्रण प्रस्तुत करता है। मानवीय अनुभूतियों की तीव्रता के साथ आदिम स्वरूप की आधुनिकतम, समन्वयकारी अभिव्यक्ति का साक्षात प्रतिबिंब है छत्तीसगढ़ी लोक नाट्य।

छत्तीसगढ़ी लोक नाट्य का बदलता स्वरूप

नाटकों के पात्र प्रसंगानुसार भूमिका का निर्वहन करते हुए धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना का भावानुकूल सहज संप्रेषण करते हैं। संगीत एवं काव्य के समन्वय के साथ गीत, नृत्य और संगीत का समावेश नाटक को आनंद की चरम में पहुंचा देता है। गंभीर चिंतनशील भावों के साथ हास्यास्पद स्वांग दशकों को कभी सुख, दुख तो कभी हास्य बोध कराता है। मानवीय संस्कारों की व्यंजना से ओतप्रोत सास बहू, ननद भौजाई के नोक झोंक,प्रेमी प्रेमिका, सौतेली मां बाप बेटे के प्रसंगों को साथ लेकर समूह रूप से मन के भावों को स्पर्श करने, हंसने रुलाने और अपने साथ भावात्मक रूप में बहाने का काम करते हैं। नाचा उन्मुक्त माहौल और कहानी कहने की कला के साथ संवेदनशील दर्शकों को रस विभोर करने की क्षमता रखती है, यही कारण है कि लोगों की दीवानगी नाचा के प्रति बनी हुई है। वर्तमान में इक्कीसवीं सदी के बुद्धिजीवी, रंगकर्मी और कला मर्मज्ञ नाचा को देख और सुन रहे हैं, यह नाचा की महत्ता को रूपांकित करते हैं। आधुनिक लोक नाट्य का रूप नाचा का बदलता रूप है। ठेठ नाचा का परिष्कृत और परिमार्जित रूप लोक परंपरा के आस्था के साथ चलता है। सामाजिक गतिशीलता और परिवर्तनशीलता के प्रभाव ने नाचा को आधुनिक छत्तीसगढ़ी लोक नाट्य में रूपांतरित किया। विगत दशकों में आधुनिक छत्तीसगढ़ी लोक नाट्य के रूप में प्रदर्शित हुए लोक नाट्यों में क्रमशः चंदैनी गोंदा, सोनहा बिहान, लोरिक चंदा, कारी, सोन सरार, हरेली, हिरमा की अमर कहानी, दशमत कैना, गम्मतिहा, आदि हैं। 50-50 कलाकारों के समूह के रूप में छत्तीसगढ़ी भाषा, साहित्य, संस्कृति को दाऊ रामचन्द्र देशमुख ने गौरवान्वित कर लोक मंच को लोक नाट्य के रूप में शीर्ष पर पहुंचाया।

लोक नाट्यः डा. फिरोजा जाफर अली

आस्थाः सुरेश तिवारी

दंतेवाड़ा में मां दंतेश्वरी की विभिन्न रूपों में पूजा

बहुत समय पहले सुविधा के अभाव में छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा के निकटस्थ ग्रामों के ग्रामीण मां दंतेश्वरी की पूजा अर्चना हेतु पैदल आते थे। साधन के अभाव में ग्रामीणों ने मां दंतेश्वरी के ही विभिन्न रूपों को देवी के रूप में अपने अपने ग्राम में माता गुड़ी बना कर स्थापित किया। इस तरह यहां पूजा किए जाने वाली विभिन्न देवियों को भी मां दंतेश्वरी का रूप माना जाता है। मावली माता इनमें सबसे प्रमुख हैं। इनके अलावा टेकानार से परदेसिन माता, हिरमा देवी, शीतला माता, कोलाकामिन माता, ग्राम बालपेट में गंगना देवी, मटेनार में सेमरिया माता, बेंगलूर में पातका देवी, मलेनार में पीला देवी, कारली में घासबेड़ीन माता की पूजा की जाती है, इन माताओं को मां दंतेश्वरी की बहनें भी कहते हैं। यहां माता की 32 बहनों में प्रमुख रूप में कोट गुड़िन, पेंडरावडीन, कंकालीन, परदेसीन, बिजलीकरीन, शीतला, जलनीबूढ़ी, दुलारदई, रेवागड़ीन, हिरमादई, कोलाकामिनी आदि हैं। यह देवियां माता गुड़ी में अलग अलग स्थानों में स्थापित हैं। अनेक पर्वों पर तथा किसी भी घर मांगलिक कार्य होने पर सर्वप्रथम माता मंदिर में पूजा अर्चना की जाती है ताकि माता के आशीर्वाद से सभी कार्य सुगमता और सरलता से संपन्न हो सके। माता के इस स्थल पर साफ सफाई की विशेष व्यवस्था की जाती है।

सुरता
तेरस यादव

कई विधाओं में लेखन किए बाबूलाल सीरिया

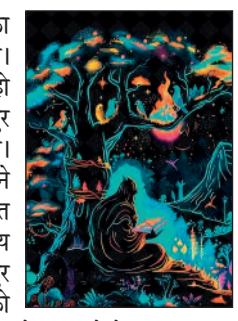

लोक कवि बाबूलाल सीरिया का जन्म कोलकाता में हुआ था। बाल्यकाल में पिता के निधन हो जाने के कारण माताजी के साथ बिलासपुर आकर स्थाई रुप से निवास करने लगे। छत्तीसगढ़ की माटी में रम जाने के कारण उन्होंने छत्तीसगढ़ी में अपनी प्रथम कृति गमकत गीत का प्रकाशन कराया। उसके बाद हिन्दी में काव्य संग्रह मधुरस का प्रकाशन कराया। बिलासपुर के भारतेंदु साहित्य समिति की क्रियाशीलता को आगे बढ़ाने में कोई कमी नहीं किए। सीरिया जी हमेशा मानते थे कि काया यदि कोठा है तो उसमें निहित धुंधवाता मन अवस्थित अन्न खरही सदृश है। सीरिया जी अपने छत्तीसगढ़ी काव्य संग्रह में लिखते हैं -

चंदा के चंदैनी ह माते हे अलबेली,
चिटिक सुग्घर दिखय जइसे नरियर के भेली।
लाही अस छटके आंखी आमा कस कइरी,
झूमर झूमर लागय जइसे बाजत हावय पइरी।
होंठ म ले चहय बुंदी अमरित सही झलकय,
गंगा जमुनी लुगरा भीतर चूरी खन खन खनकय।

सीरिया लेखनी के अलावा लेखकों को मंच भी प्रदान करने में लगे रहे। आपकी कई कृतियां अप्रकाशित रहीं। प्रकृति चित्रण, पलायन, मां बेटी का दर्द, सामाजिक पहलू आपके लेखन के विषय रहे हैं। आप अपने जीवन के अंतिम सांसों तक लेखन करते रहे।

लेखकों से..

छत्तीसगढ़ की लोक कला, लोक साहित्य, पर्यटन, तीज त्योहार, गांव की कहानी, ऐतिहासिक, पुरातात्विक, शैलचित्र, भित्तिचित्र, कला कृति और पुरखा के सुरता के साथ ही सम सामयिक विषयों पर अधिकतम 500 शब्दों पर लेख भेजें- **Choupalharibhoomi@gmail.com**

लोक साहित्य
डा. यशेश्वरी ध्रुव

छत्तीसगढ़ी संस्कृति पर साहित्य का प्रभाव

छत्तीसगढ़ी भाषा के साहित्य में संस्कृति स्वस्फूर्त होगी। इसमें अपवाद भी हो सकते हैं। इस अंचल में रमे और संस्कृति में जमे बिना छत्तीसगढ़ी साहित्य लिखा जाएगा तब वह साहित्य न स्थायित्व को प्राप्त करेगा, न ही भाषा के स्वस्थ स्वरूप को ही अनावृत करेगा। इसलिए सूचकों के आधार पर शब्दानुवाद तो संभव है लेकिन मौलिक लेखन नहीं।

हिन्दी में अंचल विशेष पर लिखित कथा साहित्य जबकि लोक भाषा में लिखित साहित्य अंचल विशेष के साहित्य से संबद्ध होगा, यथा - छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी,बुंदेली साहित्य। छत्तीसगढ़ी भाषा के साहित्य में संस्कृति स्वस्फूर्त होगी। इसमें अपवाद भी हो सकते हैं। इस अंचल में रमे और संस्कृति में जमे बिना छत्तीसगढ़ी साहित्य लिखा जाएगा तब वह साहित्य न स्थायित्व को प्राप्त करेगा, न ही भाषा के स्वस्थ स्वरूप को ही अनावृत करेगा। इसलिए सूचकों के आधार पर शब्दानुवाद तो संभव है लेकिन मौलिक लेखन नहीं। आंचलिक भाषा का रचनाकार अंचल के भूगोल, इतिहास, जनजीवन और प्रकृति से इतना समरस हो जाता है कि उसके भीतर जाकर वह अपनी पड़ताल करता है। इस तरह छत्तीसगढ़ी साहित्य में रहन सहन, खानपान, रीति रिवाज , व्रत त्योहार, पर्व उत्सव,मेले मड़ई, जादू टोना, लोक मान्यता,लोक विश्वास,लोक धर्म आदि वह सब कुछ अभिव्यक्त होता है जो संस्कृति को समग्रता से परिभाषित करता है। हिन्दी साहित्य में छत्तीसगढ़ी संस्कृति का प्रभाव उसे जहां आंचलिक बना देता है, वहीं छत्तीसगढ़ी साहित्य में जीवंत बना देता है। छत्तीसगढ़ी कथा साहित्य में संस्कृति के प्रायः समग्र तत्व समाहित हैं। यही कारण है कि छत्तीसगढ़ी कथा साहित्य आज भी संस्कृति का संवाहक सिद्ध हुआ है। इसमें छत्तीसगढ़ी मनुज की तरह संस्कृति भी सन्निहित है। जो साहित्य संस्कृति को संरक्षित रखता है वह प्रकारांतर में जीवन मूल्यों को महत्व देता है और मानवता को मान देता है। ऐसा साहित्य सार्थक अनुभूति के लिए सार्थक भाषा का अन्वेषण भी करता है तदनुरूप सांस्कृतिक शब्दों के प्रयोग, मुहावरों कहावतों के योग व ध्वन्यात्मकता के उपयोग को सहज ही उपस्थित कर देता है। इस तरह छत्तीसगढ़ी संस्कृति का साहित्य पर प्रभाव अवश्यंभावी है।